International Journal of Professional Development
ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online) Vol.14, No.1, Jan-June 2025

मैथिलीशरण गुप्त रचित सैरंध्री काव्य में सैरंध्री का चरित्र

डॉ. अमितेश बोकन
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय सेक्टर 14 गुरुग्राम
Email : amitesh-boken@gmail-com

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के समग्र साहित्य में स्त्री की दशा सुधार की चिंता, परिवार, समाज और देश के विकास के लिए स्त्री के श्रेष्ठ गुणों की अनिवार्यता बार–बार व्यंजित होती रही है। उन्होंने पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथाओ में अभी तक उपेक्षित स्त्री पात्रों को विशेष रूप से लक्षित करके रचनाएं लिखी जिनको अभी तक श्रेष्ठ कवियों की वाणी का सहारा नहीं मिल सका था। बदलते युगीन मूल्य और तत्कालीन भारतीय समाज की परिवर्तनकामी आकांक्षाओं की प्रतिपूर्ति में उन्होंने यह गहरा अनुभव किया कि भारत की उन्नति में स्त्रियों को साथ लेकर चलने से ही परिवर्तन आ सकता है। उन्होंने भारतीय समाज के तत्कालीन स्त्रियों की दशा को सुधारने की बात कही। साथ ही उन्होंने ऐसे पौराणिक चरित्रों को पाठकों के समक्ष रखा जिन्होंने भारतीय संस्कृति के श्रेष्ठ मूल्यों की रक्षा के निमित्त अपने जीवन में अनंत संघर्ष करते हुए अंततरू अपने चरित्र की रक्षा के साथ–साथ अपने कुल, परिवार और देश के चरित्र की भी रक्षा की। डॉ प्रभाकर माचवे ने लिखा है कि उनके–**"प्रत्येक कविता संग्रह में ऐसे अनेक पद्य और ऐसी कविताएं मिल जाएगी जो प्रसिद्ध स्त्रियों का उल्लेख करती है या उनकी दुर्दशा का सुधार करने का संकेत करती** है"[1] अपनी पुस्तक भारत भारती के अतीत खंड में उन्होंने आर्य स्त्रियों के आदर्श का उल्लेख करते हुए अनेक पौराणिक स्त्री पात्रों का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है ––

"केवल पुरुष ही थे न वे जिनका जगत् को गर्व था,
गृह–देवियाँ भी थीं हमारी देवियाँ ही सर्वथा।
था अत्रि–अनसूया–सदृश गार्हस्थ्य दुर्लभ स्वर्ग में,
दाम्पत्य में वह सौख्य था, जो सौख्य था अपवर्ग में।
निज स्वामियों के कार्य्य में समभाग जो लेतीं न वे,
अनुरागपूर्वक योग जो उसमें सदा देतीं न वे।
तो फिर कहातीं किस तरह अर्धांगिनी सुकुमारियाँ,
तात्पर्य् यह अनुरूप ही थीं नरवरों क नारियाँ।" [2]

आदर्श स्त्री पात्रों के वर्णन के क्रम में उन्होंने विधुला, सुमित्रा, कुंती, गांधारी, सावित्री, सुकन्या, अंशुमती, दमयंती इत्यादि श्रेष्ठ स्त्री पात्रों का उल्लेख किया है। जिन स्त्री पात्रों के त्याग और संघर्ष को पौराणिक कलमकार स्थान नहीं दे सका उनको उन्होंने उर्मिला, सैरंध्री, यशोधरा इत्यादि कवियों के रूप में व्यक्त किया है। बारह वर्ष के वनवास के पश्चात पांडवों को एक वर्ष अज्ञातवास के रूप में व्यतीत करना था। इस एक वर्ष को पांडवों ने द्रौपदी सहित मत्स्य देश की राजधानी विराटनगर में राजा विराट के यहां भेष बदलकर व्यतीत किया। युधिष्ठिर ने कंक नाम से, भीम ने बल्लभ नाम से , अर्जुन ने वृहनल्ला नाम से, सहदेव ने तन्तिपाल और नकुल ने तन्तपाल नाम से तथा द्रौपदी ने सैरंध्री नाम से अपना जीवन व्यतीत किया था। विराट नगर के राजा ने सुदेष्णा से विवाह किया था जो कीचक की बहन थी। कीचक के बल और पराक्रम का आतंक कुछ राज्य के राजा पर तथा अन्य सभी प्रजाजनों और आसपास के राजाओं पर भी था। वह अन्यायी और दुराचारी था।

द्रोपदी के चरित्र के माध्यम से गुप्त जी ने आदर्श भारतीय नारी की स्थापना की है। द्रोपदी में उन्होंने ऐसे अनेक गुणों का उल्लेख किया है जो सही अर्थों में भारतीय नारी के त्याग संघर्ष और उसके नैतिक मूल्यों को उजागर करता है। द्रोपदी के चरित्र की सैरँध्री काव्य में निम्न विशेषताएं देखी जा सकती है।

सौंदर्य

द्रौपदी अति रूपवान स्त्री के रूप में चित्रित की गई है। विराट नगर के राजा के यहां एक दासी के रूप में कार्य करते हुए भी वह अत्यंत रूपवान बनी हुई है। हालांकि उसे रानियों के जैसे वैभव तथा सौंदर्य संसाधन उपलब्ध नहीं है। साधारण वस्त्र तथा मालिनवेश होते हुए भी रहे चंद्रकला के समान लगती है। गुप्त जी ने कहा है–

"छिपी हुई भी प्रकट रही मानो पांचाली
छिप सकती थी कहाँ कान्ति की कला निराली ?
वह अंगों की गठन और अनुपम अलकाली
जा सकती थी कहाँ चाल उसकी मतवाली ?
काली काली आँखें बड़ी कानों से थीं लग रहीं,
गुण और रूप की ज्योतियाँ स्वाभाविक थीं जग रहीं।" [3]

अपने भाई कीचक को सुदेष्णा भी सैरंध्री के कल्याणी रूप और उसके पवित्र किंतु तेजमय सौंदर्य का अंकन करती हुई रहती है ––

वह सहसा आ खड़ी हुई मेरे प्रांगण में,
जय–लक्ष्मी प्रत्यक्ष खड़ी हो जैसे रण में !
वेश मलिन था किन्तु रूप आवेश भरा था।
था उद्देश्य अवश्य किन्तु आदेश भरा था ।
मुख शान्त दिनान्त समान ही, निष्प्रभ किन्तु पवित्र था।
नभ के अस्फुट नक्षत्र–सा, हार्दिक भाव विचित्र था। [4]

www.ijpd.co.in

International Journal of Professional Development
ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online) Vol.14, No.1, Jan-June 2025

वह शैवाल में लिपटी हुई कमल काली के समान सुंदर लगती है और बादलों से घिरी चंद्रकला के समान सबके मन को मोहित करती है। गुप्त जी ने कहा है ––

छिपी हुई भी प्रकट रही मानो पांचाली य
छिप सकती थी कहाँ कान्ति की कला निराली ?
वह अंगों की गठन और अनुपम अलकाली,
जा सकती थी कहाँ चाल उसकी मतवाली ?
काली काली आँखें बड़ी कानों से थीं लग रहीं,
गुण और रूप की ज्योतियाँ स्वाभाविक थीं जग रहीं। [5]

वह संध्या रूपी सुकुमारी के समान है। और उसके हृदय में आकाश के मौन रहने वाले नक्षत्र के समान शांत भाव भरा हुआ है। उसका मुख सूर्यास्त के समय की लालिमा के समान चमकता है। उसके वस्त्र मलिन जरूर है किंतु रूप कांतिवान है। समग्र रूप से रहे जय लक्ष्मी के रूप में मंगल कल्याण करने वाले रूप में चित्रित की गई है।

कार्य कुशलता

सैरंध्री के रूप में द्रौपदी विराटनगर के यहां एक दासी का कार्य करती है। उसे अपने कर्तव्य पालन का भली भांति पता है। वह जानती है कि स्वामी और स्वामिनी की आज्ञा पालन करना तथा उनकी सेवा करना उसका कर्तव्य है। वह पूरे मनोयोग से अपने कर्तव्य का निर्वहन करती है। सुदेष्णा उसके परिश्रमी व्यक्तित्व का परिचय देते हुए कहती है ––

बहुधा अन्यमनस्क दिखाई पड़ती है वह,
मानो नीरव आप आप से लड़ती है वह !
करती करती काम अचानक रुक जाती है,
करके ग्रीवा–भंग झोंक से झुक जाती है।
बस भर सँभाल कर चित्त को श्रम से वह थकती नहीं
पर भूल करे तो भर्त्सना मैं भी कर सकती नहीं । [6]

उसकी कार्य कुशलता देखकर सुदेष्णा का हृदय विस्मित हो जाता है। वह उसकी प्रशंसा उसी के सामने करना भी चाहती है किंतु उसके हृदय में भरे हुए शोक भाव को देखकर कुछ कह नहीं पाती है।

पातिव्रत्य

भारतीय संस्कृति और साहित्य में पतिव्रता स्त्री के महत्व को स्वीकार करते हुए उसकी प्रशंसा सर्वत्र की गई है। स्त्री का चरित्र ही आदर्श परिवार और आदर्श संतान की नींव बनता है। आचार्य चाणक्य ने पतिव्रता स्त्री के विषय में लिखा है –––

सा भार्या या शुचिर्दक्षा सा भार्या या पतिव्रता।
सा भार्या या पतिप्रीता सा भार्या सत्यवादिनी ।। [7]

आदर्श पत्नी के संदर्भ में चाणक्य कहते हैं कि जो स्त्री पवित्र, चतुर, समझदार होय जो पतिव्रत–धर्म का विधिवत् पालन करेय जो केवल पति से ही प्रेम करेय जिसकी वाणी सदैव सत्य वचन बोले तथा असत्य का परित्याग करे, केवल वही नारी मान–सम्मान के योग्य तथा घर–परिवार के लिए उपयुक्त कही गई है।

कीचक द्वारा जब सैरंध्री को उसका प्रणय निवेदन स्वीकार करने के लिए प्रलोभन दिया जाता है तो वह स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर देती है। वह संयम के साथ कीचक को प्रबोधित करती हुई अपने दृढ़ व्यक्तित्व का परिचय देती है।

"सावधान हे वीर, न ऐसे वचन कहो तुम,
मन को रोको और संयमी बने रहो तुम ।
है मेरा भी धर्म, उसे क्या खो सकती हूँ ?
अबला हूँ, मैं किन्तु न कुलटा हो सकती हूँ।
मैं दीना हीना हूँ सही, किन्तु लोभ–लीना नहीं,
करके कुकर्म संसार में मुझको है जीना नहीं।" [8]

वह कीचक को धर्मपूर्वक आचरण करने के लिए कहती है। और कहती है कि आकाश में देवता मनुष्यों के द्वारा किए जाने वाले सारे अधर्म – कार्यों को देख रहे हैं। वह कहती है कि मेरे पांच पति हैं और मैं तन – मन और धन से उन्हीं की दासी हूं। वह कीचक को भी के पराक्रम और शील की भी याद दिलाती है। रानी सुदेष्णा के द्वारा जब उसे कीचक के महल में जाने का आदेश दिया जाता है तो वह विनय पूर्वक कहती है––

"क्षमा कीजिये देवि, आप महिषी मैं दासी,
कीचक के प्रति न था हृदय मेरा विश्वासी ।
इसलिए न आपे में रही, सुनकर उसकी बात मैं,
सहती हूँ लज्जा–युक्त हो ! उसके बचनाघात मैं।" [9]

इस प्रकार स्पष्ट है की सैरंध्री अपने सतीत्व की रक्षा के निमित्त दृढ़ प्रतिज्ञ है। उसका आदर्श अनुकरणीय है और वह अनाचारी कीचक के सामने भी निर्भयतापूर्वक अपनी बात रखने का साहस रखती है।

कलाप्रियता

सैरंध्री चित्रकला में निपुण है। वह एक कलाकार की भांति ना अपने मन के सुख–दुख की अभिव्यक्ति को चित्रकला में अभिव्यक्त करती है। कीचक के द्वारा अपमानजनक व्यवहार करने पर वह अपने क्रोध की अभिव्यक्ति चित्र के माध्यम से करती है। सुदेष्णा उसके चित्रकला के प्रशंसा करती हुई कहती है –

सैरन्ध्रो उस समय चित्र–रचना करती थी,
हाथ तुला था और तूलिका रंग भरती थी ।
देख पार्श्व से मोड़ महा ग्रीवा, कुछ तन कर,
हँस बोली वह स्वयं एक सुन्दर छबि बन कर। [9]

द्रौपदी ने राजभवन का चित्र खींचते हुए सुदेष्णा को झरोखे में बैठी हुई चित्रित किया है। बीच के मैदान में वल्लव रूपी भीम दो हाथियों से युद्ध कर रहे थे–––

यही भीम–गज–युद्ध चित्र का मुख्य विषय था,
जय निश्चय के साथ साथ ही सबको भय था ।
पार्श्वों से भुजदण्ड वीर के चिपट रहे थे,
उनमें युग कर–शुण्ड नाग–से लिपट रहे थे ।
गज अपनी अपनी ओर थे उन्हें खींचते कक्ष से,
पर खिचे जा रहे थे स्वयं, भीम–संग प्रत्यक्ष से । [10]

सैरंध्री की चित्रकला की प्रशंसा करती हुई सुदेष्णा कहती है कि बड़ी चतुराई से तुमने इस चित्र में स्वयं को नहीं रखा है। कुशल चित्रकार केवल भावों का प्रकटीकरण नहीं करता है, अपितु कुछ भावों को अप्रकट रहने देता है ताकि वे छिपे हुए भाव सहज बुद्धि से स्वयं ही दर्शक के उनके सामने

www.ijpd.co.in

आ सके। सुदेष्णा ने इस बात की प्रशंसा करते हुए कहा है––

रानी बोली – धन्य तूलिका है सखि तेरी,
कला–कुशलता हुई आप ही आकर चेरी।
किन्तु आपको लिखा नहीं तूने क्यों इसमें ? [11]

स्पष्ट है द्रौपदी अत्यंत कुशल चित्रकार है। वह मन ही मन निर्णय कर लेती है कि कीचक का वध वह भीम से करवाएगी। और चित्र में भविष्य की इसी घटना का अंकन वह करती है। चित्र बनाकर वह एक तरह से विराट नगर के राजा और रानी को एक तरह से कीचक के वध का संकेत भी देती है। स्पष्ट है सैरंध्री भविष्य की घटनाओं के सटीक अनुमान लगाने के साथ–साथ उन्हें चित्र के रूप में अंकित करने में भी निपुण है।

वचन चातुर्य

सैरंध्री पर्याप्त रूप से वचन चातुर्यता का परिचय देती है। जब कीचक उसे तरह–तरह का प्रलोभन देता है तो वह उसके प्रलोभनों को बड़ी ही चतुराई से ठुकराती है और उसे सच्चे पुरुष के धर्म का प्रबोधन देती हैकृ

पर– नारी पर दृष्टि डालना योग्य नहीं है,
और किसी का भाग्य किसी को भोग्य नहीं है। [12]

सुदेष्णा भी उसकी वचन चातुर्य के बारे में उससे कहती है कि––

क्रिया–सहित तु वचन–विदग्धा भी है आली,
ह तेरी प्रत्येक बात ही नई, निराली । [13]

अपनी इसी वचन चातुर्यता के बल पर वह कीचक को झूठे प्रेम भरे वचन बोलती है। कीचक के शोषण और अन्याय के अंत के लिए वह झूठा स्वांग भी रखती है। वह कहती है कि अब मुझसे बात करने वाला कोई नहीं है और मुझे एक दासी के रूप में रहना पड़ रहा है। अतः वह कीचक का आश्रय पाना चाहती है। नृत्य , गायन और वाद्य संगीत का भी मनोरंजन प्राप्त नहीं हो पा रहा है। कीचक को झूठा प्रलोभन देती हुई वह कहती है –

रहता कोई नहीं बात तक करने वाला,
तिस पर शयन–स्थान मिला है मुझे निराला ।
कहाँ उत्तरा की सदीर्घ तोर्यत्रिक शाला,
उसका वह विश्रान्ति–वास दक्षिण दिशि वाला ।
कोई क्या जाने कटती कैसे उसमें रात मैं ?
पागल सी रहती हूं पर्दा सह कर शोका घात मैं। [14]

इस प्रकार कीचक उसकी बातों में आ जाता है और अंतत उसके निर्धारित स्थान पर रात्रि में आने का आश्वासन देता है जो बाद में चलकर कीचक की मृत्यु का कारण बनता है।

विनयशीलता

मैथिलीशरण गुप्त ने सैरंध्री के चरित्र का अंकन करते हुए उसकी विनयशीलता की तरफ भी पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। वह जीवन के उतार–चढ़ाव के बीच सामंजस्य रखते हुए वर्तमान परिस्थिति में अपने पद और अपने जीवन के नाजुक संकट ग्रस्त समय को पहचान लेती है। वह दासी बनकर अज्ञातवास के 1 वर्ष को निकलना चाहती है। सुदेष्णा जब उसे कीचक के पास जाने के लिए आदेश देती है तो वह स्पष्ट रूप से मना कर देती है। इस पर रानी उससे क्रोधित होती है तो भी वह अपने विनयशीलता का परिचय देती हुई रहती है –

क्षमा कीजिये देवि, आप महिषी मैं दासी,
कीचक के प्रति न था हृदय मेरा विश्वासी ।
इसलिए न आपे में रही, सुनकर उसकी बात मैं,
सहती हूँ लज्जा–युक्त हा ! उसके बचनाघात मैं । [15]

कीचक जब उसकी सुंदरता की प्रशंसा करता हुआ उससे दासी का वेश त्याग कर अपनी रानी बन जाने का अनुरोध करता है तब भी वह विनय पूर्वक उससे धर्म के मार्ग पर चलने का अनुरोध करती है। वह कीचक से अनीति को त्याग कर धर्म के मार्ग पर चलने के लिए कहती है ––

"अहो वीर बलवान, विषम विष की धारा–सी,
बोलो ऐसी बात न तुम मुझ पर–दारा से ।
तुम जैसे ही बली कहीं अनरीति करेंगे,
तो क्या दुर्बल जीव धर्म का ध्यान धरेंगे ?
नर होकर इन्द्रिय–वश अहो ! करते कितने पाप हैं ;
निज अहित–हेतु अविवेकि जन होते अपने आप हैं। [16]

इस प्रकार वह पूरे काव्य ग्रंथ में एक विनयशील स्त्री के रूप में चित्रित की गई है जो की एक भारतीय स्त्री की पहचान है। इसे प्रतिकूल परिस्थिति में भी पर्याप्त विनम्रता का परिचय देता है और उसकी वाणी में कहीं भी अनावश्यक रूप से अहंकार और चुनौती भरे स्वर दिखाई नहीं देते हैं।

ईश्वर में आस्था

भारतीय संस्कृति में स्त्री और ईश्वर को एक करके देखा गया है। इसलिए हमारे यहां अर्धनारीश्वर की कल्पना की गई है। स्त्री स्वयं ईश्वर रूप होती है। सैरंध्री नामक इस काव्य में द्रौपदी ईश्वर के प्रति आस्थावान और समर्पित है। कीचक उसे विभिन्न तरह के प्रलोभन देकर अपनी रानी बन जाने का स्वप्न दिखता है। किंतु द्रौपदी उससे अपने विवेक का प्रयोग करने के लिए कहती है और समझता है कि किसी दूसरी स्त्री को भोगने का विचार निंदनीय है और यह धर्म विरुद्ध है। जब कीचक द्रोपदी की बात नहीं मानता है और उसे विवश करने लगता है तब वह ईश्वर से अपनी लाज बचाने का अनुरोध करती है ––

हरे ! हरे ! गोविन्द, कृष्ण, तुम आज कहाँ हो ?
अथवा ऐसा ठौर कौन तुम नहीं जहाँ हो ? [17]

संकट की घड़ी में मनुष्य अपने ईश्वर को ही याद करता है। द्रौपदी भी कृष्ण को याद करती है क्योंकि उन्होंने पहले भी हस्तिनापुर की राज्यसभा में उन्हें निर्वस्त्र होने की स्थिति से बचाया था। आज लगभग वैसी ही स्थित उसके साथ होने जा रही है इसलिए वह पुनः ईश्वर से अपने आंसू रूपी जल को अर्घ्य के रूप में अर्पित करती हुई अपनी प्रार्थना करती है।

रक्खी मेरी लाज तुम्हींने बीच सभा में,
हे अनन्त, पट तुम्हीं बने थे नीच–सभा में ।
फिर आज विकट संकट पड़ा निकट पुकारूँ मैं किसे ?
यहअश्रु–वारि ही अर्घ्य है आओ अच्युत, लो इसे ! [18]

मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीय संस्कृति के अनुकूल इस काव्य में द्रौपदी को आध्यात्मिक और धार्मिक दिव्यता के साथ

www.ijpd.co.in

चित्रित किया है। डॉक्टर प्रभाकर मार्च में ने लिखा है कि मैथिलीशरण गुप्त जी ने ———

"नारी–पूजा के पीछे धार्मिक और आध्यात्मिक विश्वास भी निहित हैं। हमारे यहां हिन्दू विश्वासों में पार्वती के साथ शिव, लक्ष्मी के साथ विष्णु, सीता के साथ राम, राधा के साथ कृष्ण का स्मरण करने का विधान है। श्यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्न देवताश कहा गया है। इसी भावना से सृष्टि, प्रकृति, रचना को श्लीलाश कहा गया । नारी यदि केवल दासी या भोग की वस्तु बनाई गई तो समाज विकृत हो जाता है। भुक्ति और मुक्ति के पीछे एक सन्तुलन रहना चाहिए और वह श्भक्तिश है जो स्वयं नारी है। [19]

इसके अतिरिक्त गुप्त जी ने द्रौपदी में अपनी अभिव्यक्ति की निर्भीकता, शत्रु पर भी दया करने वाली, धन और वैभव से उदासीन रहने वाली भी चित्रित किया है। जब भी कीचक का वध कर देता है तो वह उसे बुलाकर कहता है कि देखो मैंने कीचक को मार दिया है। तब द्रौपदी के हृदय में कीचक के लिए भी खेद प्रकट होता है।

कीचक के भी लिए खेद उसको हो आया।
कहाँ जाय वह सदय हृदय की ममता–माया ? [20]

इस प्रकार है स्पष्ट है कि द्रौपदी मैथिलीशरण गुप्त की नारी भावना के अनुरूप एक सच्ची भारतीय नारी के सभी चारित्रिक गुणों का प्रतिनिधित्व करती है।

संदर्भ

1) प्रभाकर माचवे, मैथिलीशरण गुप्त , पृष्ठ 80
2) मैथिलीशरण गुप्त, भारत भारती, अतीत खंड, पृष्ठ 21
3) मैथिलीशरण गुप्त, सैरंध्री, पृष्ठ 9
4) वही, पृष्ठ 14
5) वही, पृष्ठ 9
6) वही पृष्ठ 16
7) चाणक्य नीति , प्रभात प्रकाशन , पृष्ठ 41
8) मैथिलीशरण गुप्त , सैरंध्री, पृष्ठ 10
9) वही पृष्ठ 26
10) वही पृष्ठ21
11) वही पृष्ठ 22
12) वही पृष्ठ 11
13) वही पृष्ठ 21
14) वही पृष्ठ 43
15) वही पृष्ठ 24
16) वही पृष्ठ 31
17) वही पृष्ठ 13
18) वही पृष्ठ 13
19) मैथिलीशरण गुप्त, प्रभाकर माचवे, पृष्ठ 83
20) मैथिलीशरण गुप्त, सैरंध्री, पृष्ठ 44

www.ijpd.co.in